Deen Dayal Upadhyaya Gorakhpur University

(Accredited A++ by NAAC)

University in News on 05 October 2024

Dainik Jagran Page - 02, 04

18 करोड़ से हास्टल से लेकर परिसर तक चमकाने की तैयारी

पुस्तकों व शिक्षकों से दूर रही विद्यार्थियों की घट रही विश्लेषण क्षमता

'हिन्दी भाषा और साहित्य : आलोचना का मूल्य और डा. रामचंद्र तिवारी' विषय पर संगोष्ठी का किया गया आयोजन

गोरखपुर विश्वविद्यालय के संवाद भवन में आयोजित 'हिंदी भाषा और साहित्य : आलोचना का मूल्य और डा. रामचंद्र तिवारी' विषय पर संगोष्ठी में वक्तव्य देते प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

'टेल्स एंड ट्रिविया' में दिखी विद्यार्थियों की साहित्यिक प्रतिभा

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंग्रेजी विभाग में लिटरेरी क्लब के तत्वावधान में शुक्रवार को 'टेल्स एंड ट्रिविया' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें एम.ए. प्रथम और तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने अपनी साहित्यिक प्रतिभा का प्रदर्शन किया। तीन समूहों में बंटे प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

शानदार प्रदर्शन कर सुधांशु राय, राज वैभव व आस्था मिश्रा की टीम विजेता हुई। सोनल, अंबिका शुक्ला, अंजू उपाध्याय, आयुषी राय, विपिन यादव, सुंदरम पांडेय ने समूह के सदस्यों के रूप में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने अपने उत्तर और त्वरित सोच से निर्णायक मंडल और दर्शकों को प्रभावित किया। विभागाध्यक्ष प्रो. अजय कुमार शुक्ला ने बताया कि प्रतियोगिता के आयोजन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की तर्कशक्ति व संवाद क्षमता को बढ़ावा देना रहा। प्रतियोगिता में क्विज मास्टर की जिम्मेदारी जाह्नवी सिंह और श्वेता उपाध्याय ने संभाली।

अंशकालिक शोध कार्यक्रम परीक्षा का परिणाम जारी

गोरखपुर : दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय प्रशासन ने अंशकालिक शोध कार्यक्रम की प्रवेश परीक्षा का परिणाम गुरुवार घोषित कर दिया। यह परिणाम विश्वविद्यालय के प्रवेश पोर्टल www.ddugudmission.in पर देखा जा सकता है। पूर्णकालिक शोध कार्यक्रम का परिणाम पिछली 27 सितंबर को जारी किया जा चुका है। शुक्रवार से सफल अभ्यर्थियों के प्रमाणपत्र सत्यापन का कार्य भी शुरू हो चुका है। अंशकालिक शोध कार्यक्रम के लिए चयनित अभ्यर्थी 10 अक्टूबर को अपना शुल्क प्रवेश पोर्टल पर आनलाइन जमा कर सकेंगे।

Rashtriya Sahara Page - 07

हिन्दी साहित्य के कीर्ति स्तंभ हैं रामचंद्र तिवारी

गोरखपुर(एसएनबी)। हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल शिवप्रताप शुक्ल ने कहा कि अपने स्थापना काल से ही यह विश्वविद्यालय ज्ञान का कीर्तिमान रचता आ रहा है। इसने देश को बड़े-बड़े चिंतक व मनीषी दिए हैं, जिनमें से एक हैं आचार्य रामचंद्र तिवारी। वह हिन्दी साहित्य के कीर्ति-स्तम्भ हैं। उन्होंने विद्यार्थियों में साहित्य की बुनियादी समझ विकसित की। उनकी शिष्य परंपरा इसका उदाहरण है।

शिवप्रताप शुक्ल ने शुक्रवार को दीदउ गोविंदि के संवाद भवन में आयोजित 'हिन्दी भाषा और साहित्य: आलोचना का मूल्य और डॉ. रामचंद्र तिवारी' विषयक

त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में सम्बोधित करते हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ला !

तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन किया। उन्होंने बतौर मुख्य अतिथि कहा कि ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ तथा सुरति नारायण मणि त्रिपाठी की प्रेरणा से आजादी के बाद गोविन्दवल्लभ पंत ने गोविंदि की नींव रखी।

वर्तमान में पुस्तकों से दूर हो रहे विद्यार्थी : श्री शुक्ल ने कहा कि भारतीय परम्परा में गुरु का स्थान सर्वोच्च है। आचार्य रामचंद्र तिवारी के शिष्यों की समृद्ध परंपरा है, जो सफलता व सार्थकता के शीर्ष पर हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में विद्यार्थी पुस्तकों व शिक्षकों से दूर होते जा रहे हैं। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि यह एक ऐतिहासिक क्षण है, जब हम आचार्य रामचंद्र तिवारी की जन्म शताब्दी और विवि की हीरक जयंती एकसाथ मना रहे हैं। उन्होंने कहा कि आलोचना, साहित्य की आत्मा होती है। उनका जीवन व चिंतन आज भी प्रेरित करता है। उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता और साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष पद्मश्री प्रो.विश्वनाथनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि आचार्य रामचंद्र तिवारी तमाम संघर्षों के बाद भी बारंबार उठ खड़े होते थे। वे घोर यथार्थवादी थे। उन्होंने कहा कि एक बार मैं उनसे पर बनवाने के लिए कुछ उधार मांगने गया तो उन्होंने स्पष्ट कहा कि 'देखो विश्वनाथ,उतना ही रुपया दूंगा, जितना तुम न भी लौटा सको तो मेरा तुम्हारा संबंध खराब न हो।' उन्होंने कहा कि आचार्य रामचंद्र तिवारी तत्वान्वेषी कोटि के आलोचक थे। उनका अंतः प्रेरणा से किया गया लेखन उत्कृष्ट कोटि का है।

हिन्दी निदेशालय रामचंद्र तिवारी पर निकालेगा विशेषांक : उद्घाटन सत्र के विशिष्ट अतिथि एवं केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक प्रो. सुनील बाबूराव कुलकर्णी ने कहा कि मैथिलीशरण गुप्त और आचार्य रामचंद्र तिवारी का उद्देश्य एक ही है। वे दोनों, इस धरती को ही स्वर्ग-सा सुंदर बनाने के लिए जीवन-भर प्रयासरत रहे। उन्होंने कहा कि किसी शिक्षक के लिए यह बहुत बड़ा सम्मान है कि जिसका छात्र साहित्य की प्रतिनिधि सभा का अध्यक्ष रहा हो और पद्मश्री से सम्मानित किया गया हो। उन्होंने सभा के समक्ष यह ऐलान भी किया कि केंद्रीय हिंदी निदेशालय की 'भाषा' पत्रिका आचार्य रामचंद्र तिवारी पर एक विशेषांक निकालेगी। इस अवसर पर डॉ. श्वेता भट्ट की चौथी पुस्तक 'आत्मनिर्भर भारत-विकसित भारत' का विमोचन भी किया गया। उद्घाटन सत्र का स्वागत वक्तव्य हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. कमलेश कुमार गुप्त ने दिया। संगोष्ठी के संयोजक प्रो. विमलेश कुमार मिश्र ने मंच संचालन किया। कला संकाय के अधिष्ठाता प्रो. राजवंत राव ने आभार ज्ञापन किया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में केंद्रीय हिंदी निदेशालय से प्रो.सुरेन्द्र दुबे, सचिव नवमूलाल, प्रो. चितरंजन मिश्र,प्रो. नंद किशोर पांडेय,प्रो. श्रीराम परिहार, प्रो.अरएस सर्राउ, प्रो. गोपाल प्रसाद, प्रो.करुणाकर राय तिवारी, प्रो.आलोक गोयल,प्रो.उमेश नाथ त्रिपाठी,प्रो. शरद मिश्र,प्रो.अजय गुप्ता,प्रो.अनुभूति दुबे,डॉ.उपेन्द्र तिवारी,प्रो.नंदिता सिंह सहित बहुत से शिक्षक, विद्यार्थी एवं गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

धर्म, साहित्य, शोध व जनजागरण करती पुस्तकों का सजा मेला

गोरखपुर (एसएनबी)। गोविंदि के संवाद भवन के समक्ष किताबों के स्टालों पर तीन दिनों के लिए भांति-भांति की पुस्तकों का संगम छात्र, छात्राओं, शिक्षकों और शोधार्थियों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। देशी-विदेशी लेखकों की धर्म, साहित्य, शोध, व जनजागरण से सम्बन्धित ये पुस्तकें जहां छात्रों को प्रेरणा दे सकती हैं, वहीं सामाजिक जीवन के ताने-बाने को लेकर उन्हें सचेत भी कर सकती हैं। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा शुक्रवार से आचार्य डॉ. रामचंद्र तिवारी पर संवाद भवन में शुरू हुयी त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन के साथ ही पुस्तक मेला का भी आगाज हुआ। इस मेले में पुस्तकों के चार स्टाल लगाए गये हैं। जिनमें जनचेतना, डिस्काउंट बुक स्टोर्स, नई किताब और सर्व भाषा ट्रस्ट नई दिल्ली शामिल हैं।

यहां भक्ति, ज्ञान, साहित्य, शोध, स्वतंत्रता सेनानी, मार्क्स, लेनिन, सर्वहारा वर्ग इत्यादि से सम्बन्धित सभी प्रकार पुस्तकें देखने को मिलेंगी। डिस्काउंट बुक स्टोर्स के सौरभ सिंह बताते हैं कि उनके पास साहित्य से सम्बन्धित पुस्तकों का पूरा भंडार है। राजकमल, राधा कृष्ण, ज्ञानपीठ राजपाल व गीताप्रेस की पुस्तकें मौजूद हैं। वतीन्द्र मिश्र की अयोध्या पर आधारित दार्शनिक स्थलों की फोटो सहित पूरी डायरेक्ट्री है। यह पुस्तक लोगों के आकर्षण का केंद्र है। जहां नाथपंथ से पहचान कराती ढेरों पुस्तकें हैं वहीं रामचरित मानस का हिन्दी, उड़िया, कन्नड़, पंजाबी, तेलगु सहित कई भाषाओं में पूरा संकलन मौजूद है। भोजपुरी -हिन्दी शब्दकोष भी मौजूद है। नरेन्द्र कोहली का महासमर, रांगेय राघव की कब तक पुकारू, धूनी का धुंआ सहित तमाम पुस्तकें हैं।वहीं जनचेतना के स्टाल पर लोगों की चेतनता को जागृत करती तमाम पुस्तकें देखने को मिलेंगी। शाकम्भरी बताती हैं कि यहां मार्क्स, एंगेल्स, साहित्य-कला, जर्मनी की क्रान्ति, समाजवाद, लेनिन की एक कदम आगे दो कदम पीछे, इटली की कहानियां, मक्सिम गोर्की की पुस्तकें, श्रेष्ठ सोवियत कहानियां इत्यादि बहुत कुछ मौजूद हैं। नई किताब प्रकाशन प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, शरतचंद्र जैसे कालजयी लेखकों की तमाम पुस्तकों का जखीरा लेकर आया है। इन किताबों पर 20 प्रतिशत का डिस्काउंट भी उपलब्ध है।

प्रवेश परीक्षा का परिणाम जारी

गोरखपुर(एसएनबी)। दीदउ गोविंदि में अंशकालिक शोध कार्यक्रम की प्रवेश परीक्षा का परिणाम शुक्रवार को घोषित कर दिया गया। यह परिणाम विश्वविद्यालय के प्रवेश पोर्टल पर देखा जा सकता है। उल्लेखनीय है कि पूर्णकालिक शोध कार्यक्रम के परिणाम पिछले 27 सितंबर को जारी हो चुके हैं और शुक्रवार से सफल अभ्यर्थियों के प्रमाणपत्र सत्यापन का कार्य भी शुरू हो चुका है। अंशकालिक शोध कार्यक्रम के लिए चयनित अभ्यर्थी 10 अक्टूबर को अपना शुल्क प्रवेश पोर्टल पर आनलाइन जमा कर सकेंगे।

Amar Ujala Page - 07, 10

हिंदी साहित्य के कीर्ति-स्तंभ हैं आचार्य रामचंद्र तिवारी

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल शिव प्रताप ने डीडीयू में राष्ट्रीय संगोष्ठी का किया उद्घाटन

संवाद न्यूज एजेंसी

गोरखपुर। हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल शिवप्रताप शुक्ल ने कहा कि आचार्य रामचंद्र तिवारी ने विद्यार्थियों में साहित्य की बुनियादी समझ विकसित की। उनकी शिष्य परंपरा इसका उदाहरण है। उनका कृतित्व विराट है। वह हिंदी साहित्य के कीर्ति-स्तंभ हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में विद्यार्थी पुस्तकों व शिक्षकों से दूर होते जा रहे हैं। इससे उनकी विश्लेषण क्षमता कम होती जा रही है। इंटरनेट से यह कमी पूरी नहीं हो सकती।

हिमाचल के राज्यपाल शुक्रवार को दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के संवाद भवन में आयोजित 'हिंदी भाषा और साहित्य: आलोचना का मूल्य और डॉ. रामचंद्र तिवारी' विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे। राज्यपाल ने कहा कि अपने स्थापना काल से ही यह विश्वविद्यालय ज्ञान का कीर्तिमान रचता आ रहा है। इसने देश को बड़े चिंतक व मनीषी दिए हैं, जिनमें से एक हैं आचार्य रामचंद्र तिवारी। वह हिन्दी साहित्य के कीर्ति-स्तंभ हैं। उन्होंने विद्यार्थियों में साहित्य की बुनियादी समझ विकसित की। उनकी शिष्य परंपरा इसका उदाहरण है। उनका कृतित्व विराट है। वह हिंदी साहित्य के कीर्ति-स्तंभ हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में विद्यार्थी पुस्तकों व शिक्षकों से दूर होते जा रहे हैं। इससे उनकी विश्लेषण क्षमता कम होती जा रही है। इंटरनेट से यह कमी पूरी नहीं हो सकती। हिमाचल के राज्यपाल गोरखपुर विश्वविद्यालय के संवाद भवन में आयोजित 'हिंदी भाषा और साहित्य: आलोचना का मूल्य और डॉ. रामचंद्र तिवारी' विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुक्रवार को उद्घाटन किया गया. कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल शिवप्रताप शुक्ल ने कहा कि आचार्य रामचंद्र तिवारी ने विद्यार्थियों में साहित्य की बुनियादी समझ विकसित की. उनकी शिष्य परंपरा इसका उदाहरण है. उनका कृतित्व विराट है. इस मौके पर कुलपति प्रो. पूनम टंडन, साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष पद्मश्री प्रो. विश्वनाथनाथ प्रसाद तिवारी, प्रो. सुनील बाबूराव कुलकर्णी,हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. कमलेश कुमार गुप्त, प्रो. विमलेश कुमार ने

संगोष्ठी को संबोधित करते राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ला। संवाद

डॉ. श्वेता भट्ट की पुस्तक का विमोचन

उद्घाटन सत्र के दौरान डॉ. श्वेता भट्ट की चौथी पुस्तक 'आत्मनिर्भर भारत(विकसित भारत' का विमोचन हुआ। डॉ. श्वेता बुद्ध पीजी कॉलेज, कुशीनगर के वाणिज्य विभाग में सहायक आचार्य हैं।

Inext Page - 02, 04

आचार्य रामचंद्र तिवारी ने साहित्य की समझ विकसित की

gorakhpur@inext.co.in

GORAKHPUR (4 Oct):दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर यूनिवर्सिटी के संवाद भवन में आयोजित 'हिन्दी भाषा और साहित्य: आलोचना का मूल्य और डॉ. रामचंद्र तिवारी' विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुक्रवार को उद्घाटन किया गया. कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल शिवप्रताप शुक्ल ने कहा कि आचार्य रामचंद्र तिवारी ने विद्यार्थियों में साहित्य की बुनियादी समझ विकसित की. उनकी शिष्य परंपरा इसका उदाहरण है. उनका कृतित्व विराट है। इस मौके पर कुलपति प्रो. पूनम टंडन, साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष पद्मश्री प्रो. विश्वनाथनाथ प्रसाद तिवारी, प्रो. सुनील बाबूराव कुलकर्णी,हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. कमलेश कुमार गुप्त, प्रो. विमलेश कुमार ने

Amar Ujala Select Page - 02, 05

हिंदी साहित्य के कीर्ति-स्तंभ हैं आचार्य रामचंद्र तिवारी : शिवप्रताप शुक्ल

डॉ. श्वेता भट्ट की पुस्तक का विमोचन करते हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल,प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी,प्रो.पूनम टंडन व अन्य।

गोरखपुर। हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल शिवप्रताप शुक्ल ने कहा कि आचार्य रामचंद्र तिवारी ने विद्यार्थियों में साहित्य की बुनियादी समझ विकसित की। उनकी शिष्य परंपरा इसका उदाहरण है। उनका कृतित्व विराट है। वह हिंदी साहित्य के कीर्ति-स्तंभ हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में विद्यार्थी पुस्तकों व शिक्षकों से दूर होते जा रहे हैं। इससे उनकी विश्लेषण क्षमता कम होती जा रही है। इंटरनेट से यह कमी पूरी नहीं हो सकती। हिमाचल के राज्यपाल गोरखपुर विश्वविद्यालय के संवाद भवन में आयोजित 'हिंदी भाषा और साहित्य: आलोचना का मूल्य और डॉ. रामचंद्र तिवारी' विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुक्रवार को उद्घाटन किया गया. कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल शिवप्रताप शुक्ल ने कहा कि आचार्य रामचंद्र तिवारी ने विद्यार्थियों में साहित्य की बुनियादी समझ विकसित की. उनकी शिष्य परंपरा इसका उदाहरण है. उनका कृतित्व विराट है. इस मौके पर कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि यह एक ऐतिहासिक क्षण है, जब हम आचार्य रामचंद्र तिवारी की जन्म शताब्दी और विवि की हीरक जयंती एकसाथ मना रहे हैं। उन्होंने कहा कि आलोचना, साहित्य की आत्मा होती है। उनका जीवन व चिंतन आज भी प्रेरित करता है। उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता और साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष पद्मश्री प्रो.विश्वनाथनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि आचार्य रामचंद्र तिवारी तमाम संघर्षों के बाद भी बारंबार उठ खड़े होते थे। वे घोर यथार्थवादी थे। उन्होंने कहा कि एक बार मैं उनसे पर बनवाने के लिए कुछ उधार मांगने गया तो उन्होंने स्पष्ट कहा कि 'देखो विश्वनाथ,उतना ही रुपया दूंगा, जितना तुम न भी लौटा सको तो मेरा तुम्हारा संबंध खराब न हो।' उन्होंने कहा कि आचार्य रामचंद्र तिवारी तत्वान्वेषी कोटि के आलोचक थे। उनका अंतः प्रेरणा से किया गया लेखन उत्कृष्ट कोटि का है।

राजधानी तिवारी ने अपने श्रम और लगन से हासिल की ऊंचाई : प्रो विश्वनाथ

गोरखपुर। हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल शिवप्रताप शुक्ल ने कहा कि आचार्य रामचंद्र तिवारी ने विद्यार्थियों में साहित्य की बुनियादी समझ विकसित की। उनकी शिष्य परंपरा इसका उदाहरण है। उनका कृतित्व विराट है। वह हिंदी साहित्य के कीर्ति-स्तंभ हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में विद्यार्थी पुस्तकों व शिक्षकों से दूर होते जा रहे हैं। इससे उनकी विश्लेषण क्षमता कम होती जा रही है। इंटरनेट से यह कमी पूरी नहीं हो सकती। हिमाचल के राज्यपाल गोरखपुर विश्वविद्यालय के संवाद भवन में आयोजित 'हिंदी भाषा और साहित्य: आलोचना का मूल्य और डॉ. रामचंद्र तिवारी' विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे। राज्यपाल ने कहा कि अपने स्थापना काल से ही यह विश्वविद्यालय ज्ञान का कीर्तिमान रचता आ रहा है। इसने देश को बड़े चिंतक व मनीषी दिए हैं, जिनमें से एक हैं आचार्य रामचंद्र तिवारी। उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता और साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष पद्मश्री प्रो. विश्वनाथनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि आचार्य रामचंद्र तिवारी तमाम संघर्षों के बाद भी बारंबार उठ खड़े होते थे। वे घोर यथार्थवादी थे। उन्होंने कहा कि एक बार मैं उनसे पर बनवाने के लिए कुछ उधार मांगने गया तो उन्होंने स्पष्ट कहा कि 'देखो विश्वनाथ,उतना ही रुपया दूंगा, जितना तुम न भी लौटा सको तो मेरा तुम्हारा संबंध खराब न हो।' उन्होंने कहा कि आचार्य रामचंद्र तिवारी तत्वान्वेषी कोटि के आलोचक थे। उनका अंतः प्रेरणा से किया गया लेखन उत्कृष्ट कोटि का है।

छात्रों को मिलेगा रेलवे रियायती आवेदन फॉर्म

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में पठन-पाठन के लिए दूर-दराज से रेल यात्रा करने वाले संस्थागत छात्र-छात्राएं रेलवे का रियायती फॉर्म नियंत्रा कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं। यह जानकारी नियंत्रा प्रो. गोपाल प्रसाद ने देते हुए बताया कि रेल विभाग की ओर से नियंत्रा कार्यालय में फॉर्म उपलब्ध करा दिए गए हैं। माह में एक से 25 तारीख तक फॉर्म को प्राप्त कर सकते हैं।

Aaj

हिन्दी साहित्य के कीर्ति-स्तम्भ हैं आचार्य रामचंद्र तिवारी- शिवप्रताप

गोरखपुर,4अक्टूबर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के संवाद भवन में आयोजित हिन्दी भाषा और साहित्य: आलोचना का मूल्य और डॉ. रामचंद्र तिवारी विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल शिवप्रताप शुक्ल ने कहा कि आचार्य रामचंद्र तिवारी ने विद्यार्थियों में साहित्य की बुनियादी समझ विकसित की. उनकी शिष्य परंपरा इसका उदाहरण है. उनकी कृतित्व विराट है.उन्होंने कहा कि ब्रह्मलीन संत महंत दिग्विजयनाथ तथा सुरति नारायण मणि त्रिपाठी की प्रेरणा से आजादी के बाद गोविन्दवल्लभ पंत ने गोरखपुर विश्वविद्यालय की नींव रखी. अपने स्थापना काल से ही यह विश्वविद्यालय ज्ञान का कीर्तिमान रचता आ रहा है. इसने देश को बड़े चिंतक व मनीषी दिए हैं. जिनमें से एक हैं आचार्य रामचंद्र तिवारी. वह हिन्दी साहित्य के कीर्ति-स्तम्भ हैं. उन्होंने विद्यार्थियों में साहित्य की बुनियादी समझ विकसित की. उनकी शिष्य परंपरा इसका उदाहरण है. उनका कृतित्व विराट है. वह हिंदी साहित्य के कीर्ति-स्तंभ हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में विद्यार्थी पुस्तकों व शिक्षकों से दूर होते जा रहे हैं। इससे उनकी विश्लेषण क्षमता कम होती जा रही है। इंटरनेट से यह कमी पूरी नहीं हो सकती। हिमाचल के राज्यपाल गोरखपुर विश्वविद्यालय के संवाद भवन में आयोजित 'हिंदी भाषा और साहित्य: आलोचना का मूल्य और डॉ. रामचंद्र तिवारी' विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे। राज्यपाल ने कहा कि अपने स्थापना काल से ही यह विश्वविद्यालय ज्ञान का कीर्तिमान रचता आ रहा है। इसने देश को बड़े चिंतक व मनीषी दिए हैं, जिनमें से एक हैं आचार्य रामचंद्र तिवारी। उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता और साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष पद्मश्री प्रो.विश्वनाथनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि आचार्य रामचंद्र तिवारी तमाम संघर्षों के बाद भी बारंबार उठ खड़े होते थे। वे घोर यथार्थवादी थे। उन्होंने कहा कि एक बार मैं उनसे पर बनवाने के लिए कुछ उधार मांगने गया तो उन्होंने स्पष्ट कहा कि 'देखो विश्वनाथ,उतना ही रुपया दूंगा, जितना तुम न भी लौटा सको तो मेरा तुम्हारा संबंध खराब न हो।' उन्होंने कहा कि आचार्य रामचंद्र तिवारी तत्वान्वेषी कोटि के आलोचक थे। उनका अंतः प्रेरणा से किया गया लेखन उत्कृष्ट कोटि का है। उन्होंने कहा कि आचार्य रामचंद्र तिवारी किसी सिद्धि में साधित नहीं हुए, मैं उन्हें एक कर्मरत साहस्यकार मानता हूं। उद्घाटन सत्र के विशिष्ट अतिथि एवं केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक प्रो. सुनील बाबूराव कुलकर्णी ने अपने संबोधन में कहा कि मैथिलीशरण गुप्त और आचार्य रामचंद्र तिवारी का उद्देश्य एक ही है, वे दोनों, इस धरती को ही स्वर्ग-सा सुंदर बनाने के लिए जीवन-भर प्रयासरत रहे।उन्होंने कहा कि किसी शिक्षक के लिए यह बहुत बड़ा सम्मान है कि जिसका छात्र साहित्य की प्रतिनिधि सभा का अध्यक्ष रहा हो और पद्मश्री से सम्मानित किया गया हो। उन्होंने सभा के समक्ष यह ऐलान भी किया कि केंद्रीय हिंदी निदेशालय की 'भाषा' पत्रिका आचार्य रामचंद्र तिवारी पर एक विशेषांक निकालेगी। इस अवसर पर डॉ. श्वेता भट्ट की चौथी पुस्तक 'आत्मनिर्भर भारत-विकसित भारत' का विमोचन भी किया गया। उद्घाटन सत्र का स्वागत वक्तव्य हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. कमलेश कुमार गुप्त ने दिया। संगोष्ठी के संयोजक प्रो. विमलेश कुमार मिश्र ने मंच संचालन किया। कला संकाय के अधिष्ठाता प्रो. राजवंत राव ने आभार ज्ञापन किया।

विश्वविद्यालय की हीरक जयंती एकसाथ मना रहे हैं। उन्होंने कहा कि आलोचना, साहित्य की आत्मा होती है, आचार्य रामचंद्र तिवारी की आलोचना, केवल रचना का मूल्यांकन के रूप में देखने और समाज की आवश्यकता के अनुसार मूल्यांकन करना उपयुक्त मानते थे। उन्होंने कहा कि आलोचना साहित्य की आत्मा है। आचार्य रामचंद्र तिवारी की आलोचना केवल रचना का विश्लेषण नहीं है, वह साहित्य को लोकमंगल के रूप में देखने और समाज की आवश्यकता के अनुसार मूल्यांकन करना उपयुक्त मानते थे। उन्होंने कहा कि आचार्य रामचंद्र तिवारी की दृष्टि कोटि के विद्वान थे, उन्होंने अपने श्रम और लगन से ऊंचाई हासिल की।उन्होंने कहा कि आचार्य रामचंद्र तिवारी तत्वान्वेषी कोटि के आलोचक थे, उनका अंतः प्रेरणा से किया गया लेखन उत्कृष्ट कोटि का है। उन्होंने कहा कि आचार्य रामचंद्र तिवारी किसी सिद्धि में साधित नहीं हुए, मैं उन्हें एक कर्मरत साहस्यकार मानता हूं। उद्घाटन सत्र के विशिष्ट अतिथि एवं केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक प्रो. सुनील बाबूराव कुलकर्णी ने अपने संबोधन में कहा कि मैथिलीशरण गुप्त और आचार्य रामचंद्र तिवारी का उद्देश्य एक ही है, वे दोनों, इस धरती को ही स्वर्ग-सा सुंदर बनाने के लिए जीवन-भर प्रयासरत रहे।उन्होंने कहा कि किसी शिक्षक के लिए यह बहुत बड़ा सम्मान है कि जिसका छात्र साहित्य की प्रतिनिधि सभा का अध्यक्ष रहा हो और पद्मश्री से सम्मानित किया गया हो। उन्होंने सभा के समक्ष यह ऐलान भी किया कि केंद्रीय हिंदी निदेशालय की 'भाषा' पत्रिका आचार्य रामचंद्र तिवारी पर एक विशेषांक निकालेगी। इस अवसर पर डॉ. श्वेता भट्ट की चौथी पुस्तक 'आत्मनिर्भर भारत-विकसित भारत' का विमोचन भी किया गया। उद्घाटन सत्र का स्वागत वक्तव्य हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. कमलेश कुमार गुप्त ने दिया। संगोष्ठी के संयोजक प्रो. विमलेश कुमार मिश्र ने मंच संचालन किया। कला संकाय के अधिष्ठाता प्रो. राजवंत राव ने विधिवत आभार ज्ञापन किया।

❖ साहित्य की आत्मा होती है आलोचना – प्रो. पूनम टंडन

❖आचार्य रामचंद्र तिवारी कभी किसी शिविर में शामिल नहीं हुए – प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

Hindustan Page - 05, 06

हिन्दी साहित्य के कीर्ति-स्तम्भ हैं आचार्य रामचंद्र तिवारी

संगोष्ठी

- आचार्य रामचंद्र तिवारी का जीवन और लेखन नई पीढ़ी के शिक्षकों के लिए एक चुनौती : प्रो.पूनम टंडन
- आचार्य रामचंद्र तिवारी तत्वान्वेषी कोटि के उच्च कर्मरत सारस्वत आलोचक हैं : प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित करते राज्यपाल शिवप्रताप शुक्ल।

आचार्य तिवारी कर्ममय सारस्वत आलोचक : प्रो. विश्वनाथ

उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता और साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष पद्मश्री प्रो.विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने संबोधन में कहा कि दुर्वादल रौंदे जाने के बाद, सूख जाने पर भी अपनी ही जीवनी शक्ति से जैसे फिर हरे हो जाते हैं। वैसे ही आचार्य रामचंद्र तिवारी जी तमाम संघर्षों के बाद भी बारंबार उठ खड़े होते थे। उन्होंने कहा कि आचार्य रामचंद्र तिवारी ने अपने श्रम और लगन से ऊंचाई हासिल की। आचार्य तिवारी घोर यथार्थवादी और तत्वान्वेषी कोटि के आलोचक थे। उनका अंतः प्रेरणा से किया गया लेखन उत्कृष्ट कोटि का है। वे घोर यथार्थवादी थे। उन्होंने कहा कि आचार्य रामचंद्र तिवारी हिन्दी साहित्य के कीर्ति-स्तम्भ हैं। उनके शिष्यों की समृद्ध परंपरा है, जो सफलता व सार्थकता के शीर्ष पर हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में विद्यार्थी पुस्तकों व शिक्षकों से दूर होते जा रहे हैं। इससे उनकी विश्लेषण क्षमता कम होती जा रही है। इंटरनेट से यह कमी पूरी नहीं हो सकती। रामचंरन शुक्ल 'रसाल', मोणीनाथ तिवारी आदि से लेकर आजतक हिन्दी विभाग की समृद्ध परम्परा रही है, जिसके मध्यबिंदु पर आचार्य रामचंद्र तिवारी खड़े हैं।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि हम आचार्य रामचंद्र तिवारी की जन्म शताब्दी और विश्वविद्यालय की हीरक जयंती एकसाथ मना रहे हैं।

भाषा पत्रिका का अंक आचार्य रामचंद्र तिवारी पर होगा केन्द्रित : प्रो. सुनील

उद्घाटन सत्र के विशिष्ट अतिथि एवं केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक प्रो. सुनील बाबूराव कुलकर्णी ने अपने संबोधन में कहा कि मैथिलीशरण गुप्त और आचार्य रामचंद्र तिवारी का उद्देश्य एक ही है। उन्होंने सभा के समक्ष यह ऐलान भी किया कि केंद्रीय हिंदी निदेशालय की 'भाषा' पत्रिका आचार्य रामचंद्र तिवारी पर एक विशेषांक निकालेगी। उद्घाटन सत्र का स्वागत वक्तव्य हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. कमलेश कुमार गुप्त ने दिया। दूसरे सत्र की सत्र की अध्यक्षता करते हुए जनजातीय केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद के कुलपति प्रो. टीवी कट्टीमनी ने कहा कि रामचंद्र तिवारी मध्यकाल के बड़े आलोचक थे। प्रो.अनिल कुमार राय ने कहा कि संस्मरणों के माध्यम से उनका जो चित्र बनता है वह उनके प्रतिभाशाली, संवेदनशील अध्यापक का बनता है।

संवाद क्षमता को बढ़ावा देने को हुई प्रतियोगिता

गोरखपुर। डीडीयू के अंग्रेजी विभाग में लिटरेरी क्लब द्वारा 'टेल्स एंड ट्रिविया' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिससे उद्देश्य छात्रों में साहित्यिक ज्ञान को परखना और उनकी तर्कशक्ति व संवाद क्षमता को बढ़ाव